मोहसिन-ए-इन्सानियत

उम्मुल मोमिनीन

हज़रते ख़दीजा स0

خدیجة الکبری سلام الله علیها

अब्बास असग़र शबरेज़

मोहसिन-ए-इन्सानियत

उम्मुल मोमिनीन

हज़रते ख़दीजा^{स0}

अब्बास असग़र शबरेज़

किताबः	मोहसिन–ए–इन्सानियत **हज़रते ख़दीजा[अ0]**
लेखकः	**अब्बास असग़र शबरेज़**
पहला प्रिन्टः	**जून 2017**
तादादः	**2000**
पब्लिशर :	**ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ**
प्रेसः	**न्यु लाइन प्रॉसेस, दिल्ली**
क़ीमतः	**15 रूपए**
कांटेक्ट न0ः	+91- 9956 62 0017 8127 79 3428

Contents

दो शब्द

बिस्मिल्ला हिर्रेरहमानिर्ररहीम

रचैता ने हमारे लिए क्या-क्या प्रबन्ध नहीं किये। आरम्भ से ही हमें शिक्षित बनाकर भेजा। अपने अज्ञाकारी फ़रिश्तों से कहा कि तुम नहीं जानते हो जो मैं जानता हूँ। सच है ''फ़रिश्तों से आगे जहाँ और है''। लेकिन यह पापी मन मानवता के सारे सिद्धान्त भूल जाता है। ऐसे में ईश्वर समय-समय पर नबियों, इमामों और दूतों को भेज कर हमारे सुधार का बेड़ा उनके कांधों पर डाल देता है।

बाबा आदम और माँ हौव्वा का आगमन यह बताता है कि मानवता एक तराज़ू समान है जहाँ एक पल्ड़ा पति है और दूसरा पल्ड़ा पत्नी है। इन्हीं दोनों से समाज का समूह आगे बढ़ता है।

नबुव्वत की अन्तिम कड़ी हमारे नबी हज़रत मोहम्मद[स०] हैं। उनका जीवन तथा उनकी नीतियाँ भी अधूरी रह जातीं अगर अबू तालिब जैसा चचा, ख़दीजा पत्नि और अली जैसा भाई उनकी सहयोगी न होतीं।

यह छोटी सी पुस्तिका जनाबे ख़दीजा के जीवन की एक प्रतिबिम्ब है जो रोचक ढंग से इतिहासिक तथ्यों के अनुसार लिखी गई है। ईश्वर के प्रति

उनका ज्ञान, रसूल के लिए उनका स्नेह तथा मानवता के प्रति उनका महान बलिदान अति महत्वपूर्ण है जिसे इतिहास कभी नहीं भुला सकता। लेखक ने बड़ी क्षमता से एक दृष्टि में इसका वर्णन किया है।

समय की माँग भी यही है कि जब दुनिया माद्दियत (Materialism) की ओर भाग रही हो तो अवश्य ज्ञान की मशाल जला दी जाए ताकि उसके प्रकाश के दीवाने उसके चारों ओर एकत्रित हों तथा जहाँ-जहाँ जाएं ज्ञान का एक द्वीप जलाते जाएं जैसे इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने किया था।

मानवता का सिद्धान्त है कि जीवन के हर मोड़ पर अपनी माँ को अवश्य याद करें क्योंकि वह दुखों से पालती है। जब उसकी सेवा भावना की तुल्ना असम्भव है तो वह माता जिसे रब उम्मुल मोमिनीन कहे और फिर जिसने आने वाली पीढ़ियों के लिए इतना बड़ा त्याग दिया हो उसे कैसे भुलाया जा सकता है।

धन्य हैं वह लोग जो आस्था भावना से यह काम कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है पढ़ने वाले इसे पसन्द करेंगे और इस कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे।

सय्यदा बिलक़ीस फ़ातिमा हुसैनी
प्रोफ़ेसर (रिटायर्ड) दिल्ली यूनिवर्सिटी
7/3, बनारसी दास स्टेट
लार्न्सस रोड
दिल्ली-110054

अपनी बात

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा रेहमान और रहीम है।

उम्मुल मोमनीन सैय्यदा ख़दीजा[अ०] इस्लामी इतिहास का वह चमकता हुआ सितारा हैं कि वह जब तक इस दुनिया में रहीं अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद[स०] के घर को अपनी रौशनी से चकमाती रहीं क्योंकि रसूल को उनके रूप में एक ऐसा सहारा, एक ऐसा हमदर्द और एक ऐसा साथी मिल गया था जिसने उनके दिल को सुख-चैन से भर दिया था। वजह यह थी कि जहाँ एक ओर ख़दीजा[स०] ने अपनी सारी दौलत इस्लाम के नाम पर लुटा दी थी जिससे इस्लाम के फलने-फूलने में आने वाली रूकावटें अपने आप दूर हो गई थीं, वहीं दूसरी ओर घर से बाहर मक्के वालों के हाथों रसूल पर जो दुखों व तकलीफ़ों के पहाड़ टूटते थे उन दुखों का इलाज घर के अंदर सैय्यदा ख़दीजा ही करती थीं। रसूल का साथ देना, उनके साथ हमदर्दी करना, उनकी हिम्मत बढ़ाना, उनके दुखे दिल को आराम पहुँचाना और हर तरह से रसूल के साथ लगे रहना... यही ख़दीजा[अ०] की ज़िन्दगी बन गई थी। अगर हम यह कहें कि इस्लाम को फैलाने में रसूले इस्लाम[स०] के साथ-साथ हज़रत ख़दीजा[अ०] का भी बहुत बड़ा हाथ है तो बिल्कुल ग़लत नहीं होगा।

इतना ही नहीं बल्कि आज दुनिया में अल्लाह के आख़िरी की जितनी भी नस्ल फैली हुई है उसमें भी हज़रत ख़दीजा[अ०] का रोल दिखाई पड़ता है क्योंकि रसूले इस्लाम की बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] हज़रत ख़दीजा से ही थीं और उनकी शादी हज़रत अली[अ०] से हुई थी और उसके बाद इन दोनों से ही रसूल की नस्ल आगे बढ़ी है।

कहना का मतलब बस इतना सा है कि इस्लाम के ऊपर हज़रत ख़दीजा[अ०] के बहुत सारे एहसान हैं और इस्लम के ऊपर ही नहीं बल्कि हमारे ऊपर भी क्योंकि अगर अल्लाह तआला ने अपने रसूल को सैय्यदा ख़दीजा का साथ न दिया होता तो आज शायद इस्लाम कहीं दिखाई भी न पड़ता, फिर मुसलमानों की तो बात ही मत कीजिए।

जो किताब आपके हाथों में है यह एक छोटी सी कोशिश है हज़रत ख़दीजा को पहचाने और उनकी बुलन्दी व दर्जे को किसी हद तक समझने की। इस किताब की तैयारी में मरहूम कर्रार हुसैन ताबा सराह की मशहूर किताब *मली-क-तुल अरब* से को समाने रखा गया है। ख़ुदा मरहूम के दर्जात बुलन्द फ़रमाए!

हर किताब की तरह इस किताब में कहीं न कहीं कोई कमी ज़रूर रह गई होगी।

इसलिए गुज़ारिश है कि ग़लतियों की तरफ़ ज़रूर मुतव्वजेह फ़रमाएं ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया जा सके।

अब्बास असग़र शबरेज़

हज़रत ख़दीजा[अ०] का घराना

अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद[स०] ने उम्मुल मोमनीन हज़रत ख़दीजा[अ०] को ''नजीबुत त-र-फ़ैन'' यानी माँ और बाप दोनों तरफ़ से शरीफ़ घराने वाली कहा है। हज़रत ख़दीजा बड़ी शरीफ़, बड़े अच्छे कैरेक्टर वाली, बहुत अक़्लमन्द व समझदार और पाक औरत थीं।

हज़रत ख़दीजा के बाप ख़ुवैलद और उनके दो भाई नौफ़िल व अम्र तीनों अपने क़बीले के सरदार थे और अरब में उनकी बड़ी इज़्ज़त थी। यह तीनों अरब के अमीरों में गिने जाते थे। हज़रत ख़दीजा के बाप का पूरा नाम ख़ुवैलद बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुसैय था- यानी ख़दीजा[अ०] बाप की तरफ़ से क़ुसैय तक पहुँचकर चौथी पुश्त में रसूले इस्लाम[स०] की नस्ल से मिल जाती हैं और इसी तरह अपनी माँ की तरफ़ से भी आठवीं पुश्त में पहुँचकर रसूले इस्लाम[स०] की नस्ल से मिल जाती हैं। इसका मतलब यह है कि रसूल[स०] और हज़रत ख़दीजा[अ०] का ख़ानदान एक ही था। यह सब के

सब अल्लाह के नबी हज़रत इब्राहीम[अ०] के दीन पर चलने वाले थे।

हज़रत ख़दीजा आमुल फ़ील से 3 साल पहले यानी सन् 567 में इस दुनिया में आई थीं। हज़रत ख़दीजा और अल्लाह के रसूल के परदादा एक ही थे जिनका नाम क़ुसैय बिन कलाब था जो क़ुरैश के ख़ानदान से ही थे। ख़ुद हज़रत ख़दीजा के बाप बड़ी इज़्ज़त वाले और बड़े अच्छे इन्सान थे जो अपने क़बीले के मशहूर सरदार भी थे।

इस्लाम लाने से पहले भी हज़रत ख़दीजा का नाम ताहिरा था। हज़रत ख़दीजा के घराने में कोई भी बुतों की पूजा नहीं करता था। उनके एक चचेरे भाई थे जिनका नाम वरक़ा बिन नौफ़िल था और उन्होंने ही हज़रत ख़दीजा की शख़्सियत (Personality) व सोच को तैयार करने में बहुत बड़ा रोल निभाया था। वरक़ा अपने वक़्त के एक बहुत बड़े आलिम (ज्ञानी) थे। वरक़ा ने ही हज़रत ख़दीजा को दीन-धर्म सिखाया था। वरक़ा भी इब्राहीमी धर्म पर चलने वाले थे और लोगों को बुतों की पूजा करने से रोका करते थे।

हज़रत ख़दीजा[अ०] की सीरत

अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मोहम्मद[स०] से शादी करने के बाद हज़रत ख़दीजा[अ०] अपनी पूरी ज़िन्दगी की धूप-छाँव में हर जगह और हर वक़्त रसूले इस्लाम[स०] के साथ-साथ रहीं। हमेशा रसूल का साथ दिया, यहाँ तक कि अगर कभी रसूल को वापस आने में देर हो जाया करती थी तो वह अपने ग़ुलामों को भेज दिया करती थीं कि जाओ! देखकर आओ! रसूल कहाँ रह गए हैं, बहुत देर हो गई है। कभी-कभी तो खुद भी रसूल[स०] को ढूँढने निकल पड़ती थीं क्योंकि रसूल के एलाने रिसालत के बाद हालात बहुत ख़राब थे और सारे मक्के वाले रसूल के दुश्मन हो गए थे। इसी वजह से वह ख़ुद ग़ारे हिरा तक रसूल के साथ जाया करती थीं। हज़रत ख़दीजा खाना लेकर पहाड़ों के ऊबड़-खाबड़ रास्तों को तय करती हुई जब पहाड़ की चोटी पर ग़ारे हिरा में रसूले इस्लाम[स०] के पास पहुँचती थीं तो रसूल को ठीक देखकर ख़ुश हो

जाया करती थीं, इतनी ख़ुश कि अपनी थकावट को भी भूल जाती थीं। एक बार आसमान से अल्लाह का फ़रिश्ता आया और हज़रत ख़दीजा की इतनी भाग-दौड़ का शुक्रिया अदा करते हुए बोला कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह का और मेरा सलाम हज़रत ख़दीजा से कह दीजिए और उन्हें जन्नत में मोतियों के महल की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए, वह महल जिसमें किसी भी तरह का दुख-दर्द नहीं होगा।

एक बार जब कुछ दिनों तक अल्लाह का फ़रिश्ता 'वही' (अल्लाह का मैसेज) लेकर नहीं आया तो रसूल का दिल परेशान हो रहा था। उस वक़्त हज़रत ख़दीजा ने ही रसूल[स०] को तसल्ली दी थी और कहा थाः अल्लाह की क़सम! अल्लाह कभी भी आपको नीचा नहीं दिखाएगा। आप ने लोगों के दुख-दर्द दूर किए हैं, जिन लोगों का कोई सहारा नहीं था उन्हें सहारा दिया है, दूसरे लोगों के दुख बांटे हैं और कैरेक्टर में आप से अच्छा कोई है ही नहीं।

इतना ही नहीं बल्कि हज़रत ख़दीजा को लोगों की बातें भी सुनना पड़ती थीं क्योंकि अरब वाले उनके पास आते थे और कहा करते थे कि ऐ ख़दीजा! आप पाक हैं और आपके जैसा कोई नहीं है लेकिन आपने अपना सब कुछ मोहम्मद[स०] पर लुटा दिया। आप कहाँ थीं और अब कहाँ आ गई हैं। हज़रत ख़दीजा जवाब दिया करती थीं कि तुमसे किस ने कहा है कि मैंने अपना सब कुछ लुटा दिया है? मैंने अपनी दौलत लुटाई नहीं है बल्कि अपनी सारी दौलत मोहम्मद[स०] को दे दी ताकि दौलत नाम की इस बेकार सी चीज़ के बदले

में दोनों जहाँ की सब से क़ीमती चीज़ ख़रीद लूँ जो मुझे मिल गई है। हज़रत ख़दीजा कहा करती थीं कि मैंने मोहम्मद स० को बस यह दुनिया की दौलत ही तो दी है मगर इसके बदले दोनों जगत की भलाई पा ली है। मैंने मोहम्मद स० को इतनी बड़ी नेमत के बदले में बहुत छोटी सी चीज़ ही तो दी है।

जिस चीज़ ने हज़रत ख़दीजा को अरब की मलिका और ताहिरा बनाया वह उनका वह बर्ताव था जो वह अरब के सारे ग़रीबों और दुखी लोगों के साथ एक माँ की हैसियत से करती थीं। उन्हें उम्मुल फ़ुक़रा यानी ग़रीबों की माँ कहा जाता था। हज़रत ख़दीजा ग़रीबों के लिए बिल्कुल एक माँ की तरह थीं।

हज़रत ख़दीजा की शराफ़त का यह हाल था कि वह दुश्मनों की इज़्ज़त का भी बड़ा ध्यान रखती थीं वही दुश्मन जिन्होंने उन्हें कई सालों तक बराबर तकलीफ़ें पहुंचाई थीं। अबू लहब की बीवी उम्मे जमील हज़रत ख़दीजा की पड़ोसन थी। यह औरत हज़रत ख़दीजा और अल्लाह के रसूल को बहुत तकलीफ़ पहुँचाया करती थी।

अबू लहब और उस की बीवी उम्मे जमील जंगल से काँटे ला-लाकर रसूल के रास्ते में बिछा देते थे। हज़रत ख़दीजा अपने नौकरों से ही वह काँटें उठवाकर फिंकवाया करती थीं।

इन दोनों ने अल्लाह के रसूल और उनकी बीवी का दिल दुखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी लेकिन हज़रत ख़दीजा ने कभी उस औरत के साथ भी ग़लत तरीक़े से बात नहीं की थी।

हज़रत ख़दीजा सारे अरब की औरतों में सबसे ऊपर थीं जिसकी वजह यह थी कि वह अल्लाह के दीन, इस्लाम से बड़ा दिली लगाव रखती थीं। उनके घर में एक जगह ऐसी भी थी जहाँ उलमा आकर बैठते थे और इल्म की बातें हुआ करती थीं।

बिज़नेस और कारोबार

हज़रत ख़दीजा का नाम उनके बहुत बड़े और दूर-दूर तक फैले हुए कारोबार की वजह से अरब में पहले ही चारों ओर फैल चुका था। उन्हें बिज़नेस की दुनिया की मलिका भी कहा जाए तो ग़लत नहीं होगा। उनका माल हजारों ऊँटों पर लद-लद कर जाता था और सारे अरब में बिकता था। अगर सारे अरब के कारोबारियों का माल इकट्ठा किया जाता तो भी हज़रत ख़दीजा का बिज़नेस उन सबके बिज़नेस से आगे निकल जाता। बात को समझने के लिए यही कहना काफ़ी होगा कि उनका बिज़नेस मिस्र, हब्शा, यमन, इराक़ व सीरिया जैसे देशों तक पहुँच चुका था।

इतने बड़े कारोबार पर कड़ी नज़र रखना और दूर-दूर तक फैले हुए कारोबार को सँभालना कोई आसान काम नहीं था। इस के बाद भी हज़रत ख़दीजा ने अपना विक़ार (Dignity), अपनी शर्मो-हया और निजी शराफ़त को पूरी तरह से बचाए रखा था और अपनी ख़ानदानी शराफ़त को

हाथ से नहीं जाने दिया था। यह था उनके कैरेक्टर (आचरण) और पर्सनालिटी का कमाल।

हज़रत ख़दीजा की सालाना आमदनी क़रीब एक लाख दीनार थी यानी बीस लाख दिरहम। अगर उनकी दौलत का ढेर लगा दिया जाता तो उस के दूसरे तरफ़ खड़े हुए लोग दिखाई न देते।

अरब में अमीरों और दौलत वालों के घर दो मन्ज़िलों के हुआ करते थे लेकिन उनका घर तीन मन्ज़िल का था। गर्मी के मौसम में उनके घर के चारों ओर हिन्दूस्तानी रेशम की चादरों के पर्दे लटकाए जाते थे ताकि घर को गर्मी की तेज़ी से बचाया जा सके। यह वह रेशम होता था जिसके बने हुए लिबास पहनने की चाह अरब के सरदारों की बीवियों के दिल में पूरी ज़िन्दगी रहती थी।

हज़रत ख़दीजा ने शादी के बाद अपनी पूरी दौलत अपने शौहर हज़रत मुहम्मद[स०] के हाथ में दे दी थी क्योंकि उनका मानना था कि उनकी यह शादी अल्लाह की तरफ़ से उनके लिए एक बहुत बड़ी नेमत है।

हज़रत ख़दीजा इस्लाम लाने से पहले भी अरबों के बीच बड़ी इज़्ज़त वाली और बहुत बुलन्द दर्जे वाली औरत थीं। अरब उनकी इतनी सारी दौलत और बहुत बड़े घराने से होने की वजह से उनकी बड़ी इज़्ज़त किया करते थे। अरबों के बीच उनकी इज़्ज़त का हाल यह था कि उनका नाम ही ''सय्यद-ए-क़ुरैश'' यानी क़ुरैश ख़ानदान की सरदार पड़ गया था।

आख़िरी नबी का इन्तेज़ार

हज़रत ख़दीजा की ज़िन्दगी की सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्हें अल्लाह के भेजे हुए आख़िरी नबी के आने का भरपूर इन्तेज़ार था क्योंकि उन्हें इस आख़िरी नबी के बारे में बहुत कुछ पहले ही पता चल गया था।

इसीलिए हज़रत ख़दीजा अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़िल से आए दिन उस आने वाले आख़िरी नबी के बारे में पूछती रहती थीं। उन्हें यह बात पता थी कि उस वक़्त जो कुछ भी अरब समाज में हो रहा था वह सब उसी आख़िरी नबी के आने की तैयारी है। उन्हें पक्का भरोसा था कि अरब की इसी ज़मीन से एक यतीम बच्चा उठेगा जो आगे चलकर अल्लाह के आख़िरी दीन का ऐलान करेगा। वह जानती थीं कि वह आने वाला जब आएगा तो सारे अरब के हालात को बदल देगा। उन्होंने उस आख़िरी नबी के आने की सारी निशानियाँ देख ली थीं।

शादी

अरब की शहज़ादी ख़दीजा ने एक दिन ख़्वाब देखा कि उनके घर में सूरज उतर पड़ा है और उसकी रौशनी से मक्के के सारे घर जगमगा उठे हैं। आँख खुली तो वह ख़ुशी-ख़ुशी सीधी अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़िल के पास पहुँचीं। उन्हें अपना ख़्वाब सुनाकर पूछा कि इसका मतलब क्या है। वरक़ा बिन नौफ़िल ने कहा कि इस ख़्वाब का मतलब यह है कि तुम्हारी शादी एक ऐसी आदमी से होगी जो अल्लाह का भेजा हुआ आख़िरी नबी होगा और जिसे रिसालत व नबुव्वत का ओहदा मिलेगा।

जब हज़रत ख़दीजा ने यह बात सुनी तो उन्हें पक्का यक़ीन हो गया कि अल्लाह के आख़िरी नबी की बीवी बस वही बनेंगी। अब इसके बाद अरब के बड़े-बड़े अमीरों और बड़े-बड़े घरानों के जितने भी रिश्ते आए वह सबको एक-एक करके ठुकराती रहीं।

अरब की शहज़ादी ने अमीरों के रिश्तों को ठोकर मारकर यह बात साबित कर दी थी कि

उनकी नज़र माल-दौलत पर नहीं थी बल्कि वह तो किसी ऐसे इन्सान की तलाश में थीं जिसके अंदर इन्सानियत कूट-कूट कर भरी हुई हो और जो अल्लाह का सबसे अच्छा बन्दा हो।

उधर अल्लाह का फ़ैसला भी हो चुका था कि ख़दीजा को ही ब्याह कर अपने आख़िरी नबी के घर में लाया जाए ताकि इस्लाम और मोहम्मदी मिशन की जड़ों को मज़बूत बनाया जा सके।

वलीमा (Reception)

हज़रत ख़दीजा की शादी बहुत धूम-धाम से हुई थी। हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से उनके चचा अम्र बिन असद और अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद[स०] बिन अब्दुल्लाह की तरफ़ से उनके चचा हज़रत अबू तालिब[अ०] ने निकाह पढ़ा था। इस निकाह के ख़ुतबे शुरूआत इस तरह से हुई थीः

सारी तारीफ़ें उस ख़ुदा के लिए हैं जिसने हमें इब्राहीम[अ०] और इस्माईल[अ०] की नस्ल में रखा है।

हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से शादी का सारा इन्तेज़ाम उनके चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़िल ने किया था जो आसमानी किताबों के जानकार होने के साथ-साथ एक बहुत बड़े आलिम भी थे। निकाह से पहले उन्होंने ख़ाना-ए-काबा में आए हुए अरब के बड़े-बड़े रईसों, अमीरों और बड़ी-बड़ी हस्तियों और वहाँ के सरदारों के बीच यह बातें कही थींः

इस शादी में आए आप सब लोगों से मैं एक सवाल करना चाहता हूँ जिसका जवाब आप लोग

पूरी आज़ादी और खुले दिल से दीजिएगा। आप लोगों का ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद के बारे में क्या कहना है?

वहाँ मौजूद सारे अरब सरदारों, अमीरों व रईसों और बुज़ुर्गों ने एक साथ एक ज़बान में कहा कि वाह-वाह! सुब्हानल्लाह! आप ने तो उनकी बात छेड़ दी है जो इज़्ज़त में सब से आगे हैं और घराने के हिसाब से उनका घराना सबसे अच्छा घराना है। अरब और नॉन-अरब हर जगह की औरतों में कोई भी उनके जैसा नहीं है।

फिर वरक़ा ने पूछाः क्या आप चाहते हैं कि वह इसी तरह बिना शादी किए अपनी ज़िन्दगी बिता दें?

सब ने कहाः नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए। उनसे शादी रचाने के लिए तो बहुत से लोग तैयार हैं लेकिन वह तो ख़ुद ही किसी को पसंद नहीं करतीं और हर एक के रिश्ते को ठुकराती जा रही हैं।

बहरहाल इसके बाद निकाह हुआ और फिर हज़रत मोहम्मद[स०] के चचा हज़रत अबू तालिब[अ०] ने वलीमे का एलान किया जिसमें मक्के के सब लोगों को दावत दी थी। वलीमा इतना लम्बा था कि तीन दिन तक आने वाले आते रहे और अपना पेट भरते रहे।

निकाह के बाद सारे मेहमान एक-एक करके अपने घरों की तरफ़ चले गए थे और हज़रत मोहम्मद[स०] भी दूसरे मेहमानों की तरह अपने चचा अबू तालिब के घर जाना चाहते थे लेकिन हज़रत ख़दीजा ने अपने शौहर से कहाः

> आइए! अब आप अपने घर में चलकर रहिए क्योंकि अब से मेरा घर आप का घर है और मैं आप की कनीज़ हूँ।

शादी के बाद आपने अपने चचा से कहा कि मेरी सारी दौलत, मेरा सारा माल और सारा कारोबार अब से मोहम्मद[स०] का है। उन से कह दीजिए कि मैंने अपना सारा माल-दौलत, सारे ग़ुलाम, सारी कनीज़ें और जो कुछ मेरे पास है सब का सब उनके नाम कर दिया है।

हज़रत ख़दीजा को ख़ुदा ने ही चुना था

सच्ची बात तो यह है कि अपने आख़िरी नबी की शादी के लिए हज़रत ख़दीजा को ख़ुद अल्लाह ने ही चुना था जिसके सुबूत के लिए नीचे लिखी बातें ही काफ़ी हैंः

हज़रत मोहम्मद[स०] को अल्लाह ने सारे इन्सानों के लिए ऑइडियल बनाकर भेजा था। इसलिए उसके नबी की बीवी को भी ऐसा ही होना चाहिए था जो औरतों के लिए ऑइडियल हो ताकि हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स०] की शादी-शुदा ज़िन्दगी में आराम व सुकून रहे और वह किसी भी इन्सान के मोहताज बनकर न रहें। इसके लिए अल्लाह ने हज़रत ख़दीजा को चुना था जिन्हें उसने अपनी नेमत कहा है।

अल्लाह चाहता था कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स०] की बीवी भी ऐसे ही घराने से हो जो इब्राहीमी दीन पर चलने वाला हो और जिसने अपना सर कभी भी किसी बुत के आगे न झुकाया हो।

हज़रत ख़दीजा के यहाँ पाँच साल तक कोई औलाद नहीं हुई थी। उसके बाद दो बच्चे हुए

पहले क़ासिम पैदा हुए जिसकी वजह से रसूल को अबुल क़ासिम पुकारा जाने लगा और फिर अब्दुल्लाह पैदा हुए मगर इन दोनों का बचपन ही में इंतिक़ाल हो गया।

मगर अल्लाह चाहता था कि हज़रत ख़दीजा की बेटी फ़ातिमा[स०] से उसके आख़िरी नबी की नस्ल चले। तभी तो हज़रत अली[अ०] व हज़रत फ़ातिमा[स०] की नस्ल में अल्लाह ने इमामत रखी थी और इन्हीं दोनों की नस्ल से 12 मासूम इमाम हुए थे। नतीजा यह निकलता है कि हज़रत ख़दीजा ही अल्लाह के रसूल की नस्ल को आगे बढ़ाने वाली हैं।

शेबे अबी तालिब के तीन साल

जब रसूले इस्लाम[स०] ने 40 साल के बाद खुलकर अल्लाह के दीन, इस्लाम का एलान किया था तो सारा मक्का उनका खुल्लम-खुल्ला दुश्मन हो गया था। यहाँ तक कि रसूल की जान के लाले पड़ गए थे। इतना ही नहीं बल्कि मक्के वालों ने रसूल के साथ-साथ उनके सारे साथियों और घर वालों से भी हर तरह के रिश्ते नाते तोड़ लिए थे जिसके बाद सब लोगों को तीन साल तक शेबे अबी तालिब नाम के दर्रे में रहना पड़ा था जहाँ न सर छुपाने की जगह थी और न ही खाने पीने के लिए कुछ था। न वहाँ कोई इन लोगों से मिलने जा सकता था और न ही यह लोग किसी से मिलने आ सकते थे। मक्के वालों ने अल्लाह के रसूल[स०] और उनके घर वालों व साथियों को इतनी बुरी तरह से समाज से अलग किया था कि सब ने मिलकर यह फ़ैसला कर लिया था कि मोहम्मद[स०] और उनका साथ देने वालों के साथ न मेल-जोल रखा जाए, न कोई चीज़ उन्हें बेची जाए और न कोई चीज़ उन से ख़रीदी जाए और न ही उनके यहाँ शादियाँ की जाएं। पूरी तरह से रिश्ते-नाते तोड़ लिए थे और इस फ़ैसले की यह सारी शर्तें

लिखकर उन लोगों ने ख़ान-ए-काबा के ऊपर भी लटका दी थीं कि हर एक इन शर्तों का ध्यान रखे।

हालात यह थे कि इस्लामी मिशन को शुरू करने वाले एक इन्सान की वजह से सारा घराना एक तरह का क़ैदी बनकर रह गया था। समाज से दूर रहकर बिताए इन तीन सालों में उन लोगों पर जो कुछ बीता था उसे पढ़कर पत्थर भी पिघल जाए। भूख का यह हाल था कि पेड़ों के पत्ते निगले जा रहे थे और सूखे चमड़े को उबाल-उबाल कर और आग पर भूनकर खाया जा रहा था। अल्लाह के रसूल के घराने के मासूम बच्चे जब भूख के मारे बिलकते थे तो दूर-दूर उनकी दर्द भरी चीखें सुनाई पड़ती थीं और मक्के वाले उन चीख़ों को सुनकर ख़ुशी से झूम-झूम जाते थे।

हालात यह थे कि हज़रत ख़दीजा को खाने-पीने का सामान कई गुना क़ीमत पर ख़रीदना पड़ रहा था और यह सारा सामान उनका भतीजा हकीम बिन हेज़ाम लाया करता था।

इतना ही नहीं बल्कि वहाँ रह रहे सब लोगों के लिए खाना भी बनाया करती थीं और वह भी इस तरह कि उनकी छोटी सी बेटी फ़ातिमा[स०] गोद में हुआ करती थीं और उन्हें गोद में लिए-लिए ही सारा काम करती थीं। बहरहाल किसी न किसी तरह यह वक़्त भी कट ही गया।

यह फ़ाक़े कौन कर रहा था? यह भूख-प्यास कौन झेल रहा था? नन्हें-नन्हें बच्चों को भूख-प्यास से तड़पता कौन देख रहा है? अरब के सरदार अबू तालिब और अरब की शहज़ादी ख़दीजा। क्यों? इस सरदार और इस शहज़ादी ने कौन सी

ग़लती कर दी है? इन दोनों की ग़लती यह थी कि यह इस्लाम का झंडा ऊँचा करने वाले अल्लाह के आख़िरी रसूल का साथ दे रहे थे। मक्के वाले अरब के इस सरदार से इसलिए नाराज़ थे कि यह हर जगह मोहम्मद[अ०] को बचा क्यों लेते हैं और अरब की इस शहज़ादी से इसलिए नाराज़ थे कि यह मोहम्मद का साथ देना क्यों नहीं बंद करतीं?

इतिहास की किताबों से यह बात साबित है कि अगर हज़रत ख़दीजा का माल व दौलत न होती तो शायद सब के सब भूखे मर गए होते। फिर न कोई इस्लाम का नाम लेने वाला होता और न कोई साथ देने वाला।

इस तीन साल के बॉयकाट के कुछ ही महीने बाद हज़रत ख़दीजा की आँख बंद हो गई थी और वह इस दुनिया से चली गई थीं।

अगर यह भी कह दिया जाए कि इन तीन सालों की तकलीफ़ें और बेहिसाब दुख ही थे जिनकी वजह से ही हज़रत ख़दीजा इतनी जल्दी इस दुनिया से चली गई थीं तो शायद यह कहना भी ग़लत नहीं होगा।

ग़ारे हिरा

ग़ारे हिरा को 'जब्लुन्नूर' 'जब्लु क़ुरआन' और 'जब्लुल इस्लाम' भी कहते हैं। हिरा मक्के के एक पहाड़ का नाम है और इसी पहाड़ के ऊपर एक गुफा भी है जिसे ग़ारे हिरा (हिरा वाली गुफा) कहत हैं। इस गुफा में क़रीब पाँच आदमी एक

साथ बैठ सकते हैं और इसकी ऊँचाई बस इतनी है कि आदमी खड़ा हो सके।

ग़ारे हिरा वह जगह है जहाँ में रसूले इस्लाम[स०] इबादत (प्रार्थना) करने जाया करते थे, ख़ासकर हर साल रमज़ान के महीने में ज़रूर जाते थे। यही वह जगह है जहाँ अल्लाह के रसूल पर पहली बार 'वही' यानी अल्लाह का मैसेज उतरा था और यही क़ुरआन की पहली आयत थी जो इस तरह से हैः

> पढ़िए! उस ख़ुदा का नाम लेकर जिसने पैदा किया है। उसने इन्सान को जमे हुए ख़ून से बनाया है। पढ़िए और आपका पालने वाला बड़ा करीम है। जिसने क़लम से तालीम दी है और इन्सान को वह सब सिखा दिया है जो उसे नहीं पता था। (सूरए अलक़)

यह गुफा मक्के के उस पहाड़ पर आज भी है और जो लोग वहाँ गए हैं वह जानते हैं कि इस गुफा तक जाना कितना कठिन काम है। अच्छा ख़ासा सेहतमंद आदमी भी या तो रास्ते ही में थक कर चूर हो जाता है या फिर ऊपर पहुँचकर निढाल हो जाता है क्योंकि पहाड़ी रास्ता है और पहाड़ी रास्तों पर चलना कोई आसान काम नहीं है।

कमाल हज़रत ख़दीजा[अ०] का है जो इस रास्ते की सारी कठिनाईयों का झेलते हुए अपने शौहर के पास खाना-पानी लेकर जाती थीं। हज़रत ख़दीजा[अ०] के इस काम की तारीफ़ ख़ुद ख़ुदा ने भी की थी और बार-बार अपने फ़रिश्ते जिब्रील के हाथों उन्हें सलाम पहुँचवाया था।

हज़रत ख़दीजाः अल्लाह के रसूल[स०] की नज़र में

हज़रत ख़दीजा[अ०] के बारे में ख़ुद अल्लाह के रसूल की पच्चीस साल की शादी-शुदा ज़िन्दगी का निचोड़ हज़रत ख़दीजा को बहुत ऊँचे दर्जे पर ले जाता है। देखिए! ख़ुद रसूल उनके बारे में क्या कह रहे हैंः

> सारी दुनिया की औरतों में सबसे बेहतर चार औरतें हैंः
>
> 1-मरयम बिन्ते इमरान
>
> 2-आसिया, फ़िरऔन की बीवी
>
> 3-ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद
>
> 4-फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद[स०]

अल्लाह के रसूल[स०] ने हज़रत ख़दीजा[अ०] से भरी जवानी में शादी की थी और इसके बाद दोनों 25 साल एक साथ रहे। हर सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ दिया। इन 25 सालों में अल्लाह के रसूल[स०] ने दूसरी कोई शादी नहीं की थी। रसूल की जितनी

भी शादियाँ हैं वह सब की सब हज़रत ख़दीजा की आँख बंद हो जाने के बाद की हैं। रसूल को ख़दीजा से इतनी ही मोहब्बत थी कि वह इस बीच किसी दूसरी शादी के बारे में सोच ही नहीं सकते थे। यहाँ तक कि जब हज़रत ख़दीजा इस दुनिया से चली गईं और रसूल ने दूसरी शादियाँ कीं तो कहने वालों ने यह भी कहा था कि आप अभी तक ख़दीजा-ख़दीजा ही करते रहते हैं और उन्हीं की तारीफ़ें किया करते हैं जबकि वह तो बूढ़ी भी थीं तो रसूल यह सुनकर बहुत नाराज़ हुए, चेहरा ग़ुस्से से तमतमा उठा, आँखें लाल हो गईं और कहाः

> ख़त्म करो यह बातें। ख़दीजा ने उस वक़्त मेरा साथ दिया था जब सारा मक्का मेरा दुश्मन था। उन्होंने तब अपना सारा माल मेरे लिए लुटा दिया जब मेरे पास कुछ भी नहीं था और वह ख़दीजा ही हैं जिनसे अल्लाह ने मुझे फ़ातिमा जैसी बेटी दी है।

जी हाँ! रसूले इस्लाम[स०] हज़रत ख़दीजा से इतनी ही मोहब्बत करते थे कि कुछ दूसरी बीवियाँ जलती भी थीं। जब रसूले इस्लाम[स०] हजरत ख़दीजा की तारीफ़ें किया करते थे तो उन्हें बहुत बुरा लगता था जबकि अब तो हज़रत ख़दीजा इस दुनिया में थीं भी नहीं। जलन का यह हाल था कि हज़रत ख़दीजा से जलने के साथ-साथ अब यह जलन रसूल की इकलौती बेटी फ़ातिमा ज़हरा[स०] से भी होने लगी थी।

अल्लाह के रसूल[स०] के दिल में हज़रत ख़दीजा[अ०] की क्या जगह थी इस बात को समझन के लिए

इतना ही बहुत है कि रसूल ने शादी के बाद अपनी ज़िन्दगी के 25 साल अपनी पहली बीवी हज़रत ख़दीजा[अ०] के साथ ही बिताए थे और इस बीच दूसरी कोई शादी नहीं थी क्योंकि ख़दीजा[अ०] ने एक अच्छी बीवी होने का पूरा-पूरा हक़ अदा कर दिया था। रसूल[स०] के उनके साथ बहुत ख़ुश और उन्हें ख़दीजा[अ०] से कोई शिकायत या तकलीफ़ नहीं थी। जबकि यह 25 साल मक्के में बीते थे जहाँ इन दोनों ने बड़ी तकलीफ़े, दुख-दर्द और कठिनाईयाँ झेली थीं। ख़ासकर शेबे अबी तालिब वाले आख़िरी तीन साल तो बड़े ही कठिन थे लेकिन इसके बाद भी हज़रत ख़दीजा[अ०] की ज़बान पर कोई शिकायत नहीं आई।

इसके उलट मदीने में बिताई ज़िन्दगी मक्के की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में आसान थी मगर इसके बावजूद कुछ बीवियों ने फिर भी शिकायतें कीं जिससे अल्लाह के रसूल[स०] को बार-बार दुख पहुँचा और उन्होंने कई बार अपना दुख जताया भी। इतना ही नहीं बल्कि क़ुरआन ने तो झिड़क भी दिया है बल्कि तलाक़ की धमकी भी दी है।

यह हैं हज़रत ख़दीजा[अ०]। जिनकी तारीफ़ क़ुरआन भी करता हुआ दिखाई देता है। इतना ही नहीं बल्कि अल्लाह के रसूल[स०] को यह हुक्म भी देता है कि ख़दीजा के एहसानों को भूल मत जाना और बराबर उन्हें याद करते रहना।

कुरआन ने भी ख़दीजा[अ०] के गुण गाए हैं

हज़रत ख़दीजा ने अपना माल, अपनी दौलत, सोना चाँदी, हीरे-जवाहरात, सारी जायदाद, नौकर, चाकर यानी अपना सब कुछ इस्लाम के नाम कर दिया था और अल्लाह के रसूल[स०] को पूरी छूट दे दी थी कि आप जिस चीज़ को जिस तरह चाहें बिना किसी रोक-टोक के ख़र्च करें। यह सारा माल मेरा नहीं बल्कि आपका है।

हज़रत ख़दीजा[अ०] ने ऐसा इसीलिए तो किया था ताकि इस्लाम के नाम पर आगे बढ़ने वाला यह मिशन रूकने न पाए।

हज़रत ख़दीजा[अ०] का काम इतना ही बड़ा था कि क़ुरआन में भी इसकी चर्चा है।

सूरए ज़ुहा की आयत/8 में अल्लाह अपने रसूल से कह रहा हैः

> हम ने आपको तंगदस्त[1] पाया तो ग़नी[2] बना दिया।

---

[1] जिसके पास कुछ भी न हो

[2] ग़नी उसे कहते हैं जो किसी का मोहताज न हो।

दुनिया का कोई ऐसा माल हम ने अल्लाह के रसूल[स०] के पास नहीं देखा जिसने उन्हें ग़नी बना दिया हो। हाँ! अगर कोई माल अल्लाह के रसूल[स०] के पास देखा गया है जिससे वह ग़नी हो गए तो वह बस हज़रत ख़दीजा[अ०] की दौलत ही थी। इसीलिए अपनी एक बीवी को झिड़कते हुए ख़दीजा[अ०] के बारे में अल्लाह के रसूल[स०] ने कहा थाः

> ख़दीजा ने अपने माल-दौलत से मेरी मदद तब की थी जब लोगों ने मुझ से सब कुछ छीन लिया था।

मुसलमानों के एक बहुत बड़े आलिम अपनी तफ़सीर में लिखते हैंः

अल्लाह ने रसूल[स०] को ख़दीजा की दौलत से ग़नी बना दिया था।

> एक दिन रसूले इस्लाम[स०] हज़रत ख़दीजा[अ०] के पास आए तो बड़े दुखी दिख रहे थे। ख़दीजा ने पूछा कि क्या बात है तो रसूल ने कहा कि चारों ओर सूखा पड़ है। अगर में तुम्हारा माल ख़र्च दूँ तो तुम से शर्म आती है और अगर ख़र्च न करूँ तो अल्लाह से डर लगता है। ख़दीजा के कहने पर रसूल ने क़ुरैश वालों को बुलाया जिनमें हज़रत अबू बक्र भी थे। वह कहते हैं कि ख़दीजा ने सोने-चाँदी के सिक्के निकाल-निकालकर ढेर लगा दिया और ढेर भी इतना ऊँचा कि मैं उन लोगों को नहीं देख सकता था जो मेरे आगे (सोने के ढेर के पीछे) बैठे हुए थे।

> फिर ख़दीजा ने कहा कि तुम सब गवाह रहना कि मेरा यह सारा माल अब अल्लाह के रसूल का है। उन्हें पूरी छूट है, चाहें तो वह इसे ख़र्च करें, चाहें तो रोक लें।

हज़रत ख़दीजा[अ०] यह नहीं कर सकीं कि उनकी दौलत रखी रहे और लोगों के दुख-तकलीफ़ें देख-देखकर रसूल कुढ़ते रहें। उनकी नियत के साथ-साथ उनकी दौलत भी इतनी पाक थी कि अल्लाह ने भी उनके माल को अपना माल कहा है जिसका सुबूत वही आयत है जिसपर अभी ऊपर बात हुई है।

सच है कि अगर इस्लाम के मददगारों -अबू तालिब और ख़दीजा- ने रसूल[स०] की मदद न की होती तो इस्लाम तो पहले ही दिन दफ़्न हो गया होता।

यहाँ तक कि किताबों में तो यह भी लिखा हुआ है कि रसूल जब भी घर से निकलते थे तो हज़रत ख़दीजा[अ०] की तारीफ़ें करते हुए।

हो सकता है कि कोई अपनी नाक-भौं चढ़ाए कि भला यह भी कोई बात हुई। कोई भला अपनी बीवी को इतना भी चाहता है? लेकिन जिन लोगों ने हिस्ट्री पढ़ी है और जो क़ुरआन को समझते हैं उन्हें पता है कि हज़रत ख़दीजा[अ०] ऐसी ही थीं कि उन्हें ऐसे ही याद किया जाए और इतना ही चाहा जाए।

मगर रसूले इस्लाम[स०] हज़रत ख़दीजा[अ०] को एक दूसरी वजह से भी इतना चाहते थे और वह था क़ुरआन का हुक्म जो इस तरह से है:

> ऐ रसूल! अपने रब की नेमतों को बार बार याद करते रहिए।[1]

अगर हज़रत ख़दीजा[अ०] ने सहारा न दिया होता और अपनी सारी दौलत इस्लाम पर न लुटा दी होती तो शायद इस्लाम दुनिया में कभी भी न फैल पाता क्योंकि कु़रआन ने भी इस बात को दोहराया है कि लोग जत्थे के जत्थे बनाकर इस्लाम के अंदर आ रहे थे। यह इस्लाम के ऊपर हज़रत ख़दीजा[अ०] का बहुत बड़ा एहसान है। इतने बड़े एहसान के बाद रसूले इस्लाम[स०] हज़रत ख़दीजा[अ०] को भला कैसे भुला सकते थे? फिर क़ुरआन का भी हुक्म था कि अपने रब की इस नेमत को भूल न जाना और बराबर याद करते रहना।

---

[1] सूरए ज़ुहा/11

आमुल हुज़्न (दुखों का साल)

बेसत का दसवाँ साल था। शेबे अबी तालिब के दुखों भरे सोशल बॉयकाट वाले तीन साल किसी तरह कट गए थे और अब हालात पहले से कुछ ठीक हो गए थे। अबू तालिब का घराना क़ैद से निकलकर खुले शहर में आ गया था। लग रहा था कि अब कुछ सुकून मिलेगा लेकिन अल्लाह के रसूल के लिए यह साल और भी दुख-दर्द लेकर आया क्योंकि यही वह साल था जिसमें नबुव्वत के दोनों मज़बूत सहारे देखते-देखते छिन गए थे यानी इसी साल रजब के महीने में अरब के सरदार और रसूले इस्लाम के चचा हज़रत अबू तालिब इस दुनिया से चले गए थे। यही दुख क्या कम था कि इसके तीन महीने बाद ही हज़रत ख़दीजा भी इस दुनिया से चल बसी थीं।

अबू तालिब[अ०] व ख़दीजा[अ०] ने हमेशा-हमेशा के लिए अपनी आँखें बंद कर ली थीं और अब मक्के वालों की आँखें ख़ुशी से चमक उठी थीं। अल्लाह के रसूल के घर के दो रौशन चिराग़ों को मौत की

आंधी ने बुझा दिया था और दुश्मनों के घरों में घी के चिराग़ जल गए थे।

अब वह गोद नहीं रही थी जिसमें अल्लाह के रसूल को आराम मिलता था और न ही वह मोहब्बत भरा साया बचा था जहाँ उन्हें सुकून नसीब होता था। अब न वह तलवार थी जो उन्हें हर ख़तरे से बचाती थी और न वह ज़बान थी जो हर पल दुआएँ देती रहती थी। वह चला गया था जो हर जगह अल्लाह के रसूल का सहारा था और वह जान लुटा देने वाली बीवी भी चली गई जिसने हर दुख-दर्द में रसूल का साथ दिया था।

यह दोनों दुख अल्लाह के रसूल के लिए इतने भारी थे कि उन्होंने इस साल का नाम ही आमुल हुज़्न (दुखों का साल) रख दिया था।

फिर रसूल[स०] ने मक्का छोड़ दिया

तीन साल तक चलने वाला सोशल बॉयकाट भी ख़त्म हो गया था लेकिन अब हालात इतने ख़राब हो चुके थे कि मक्के में रहना बहुत कठिन था क्योंकि दुश्मन आए दिन सर चढ़ता जा रहा था। उधर रसूल[स०] के दोनों बड़े सहारे यानी हज़रत अबू तालिब[अ०] और हज़रत ख़दीजा[अ०] इस दुनिया से जा चुके थे। इसलिए अल्लाह ने कहा कि ऐ मोहम्मद! अब मक्का छोड़ दीजिए और सब को लेकर मदीने चले जाइए क्योंकि दुश्मन फ़ैसला कर चुका था कि या तो अल्लाह के रसूल[स०] को क़त्ल कर दिया जाए या अगर क़त्ल न भी किया जाए तो क़ैद कर लिया जाए।

जिसके बाद अब यही रास्ता बचता था कि मक्का छोड़कर मदीना बसा लिया जाए जबकि मक्का रसूल का घर था जहाँ उनका घराना सदियों से रहता चला आ रहा था। मक्के को छोड़ना रसूल के लिए बड़ा कठिन था लेकिन अब और कोई रास्ता नहीं बचा था। फिर वह दिन भी आ गया जब अल्लाह के रसूल ने रोती आँखों से हज़रत अबू तालिब[अ०] और हज़रत ख़दीजा[अ०] को याद करते हुए मक्के को अलविदा कह दिया।

वफ़ात और वसीय्यत

जब हज़रत ख़दीजा का आख़िरी वक़्त आया तो उनकी ज़बान पर यह बातें थींः

> ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! जो आपका हक़ था मैं उसे पूरा नहीं कर सकी। मेरी ग़लतियों को माफ़ कर दीजिएगा। मैं अब इस दुनिया से जाते वक़्त आप से बस इतना चाहती हूँ कि आप मुझ से राज़ी हो जाएं।

अल्लाह के रसूल ने कहाः

> मैंने कभी आपकी तरफ़ से कोई ग़लती या कमी नहीं देखी है, आपने बड़े दुख-दर्द झेले हैं और मेरे घर में बड़ी मुसीबतें उठाई हैं।

हज़रत ख़दीजा ने अपने आख़िरी वक़्त में तीन वसीय्यतें की थींः

> (1) ऐ अल्लाह के रसूल! जो कुछ मैं कर सकती थी मैंने किया। अगर कुछ रह गया हो तो मुझे माफ़ कर दीजिएगा।

(2) मेरे बाद मेरी बेटी फ़ातिमा अकेली हो जाएगी। ऐसा न हो कि क़ुरैश में से कोई उसे दुखी करे, कोई उसे मारे, ऐसी-वैसी बात कहे या कोई उस से सख़्ती से बात करे।

(3) मेरी तीसरी वसीय्यत के बारे मे आप फ़ातिमा से पूछ लीजिएगा। यह वसीय्यत मैंने फ़ातिमा को ही बता दी है।

अल्लाह के रसूल ने अपनी बेटी फ़ातिमा ज़हरा[स०] से तीसरी वसीय्यत के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि बाबा! माँ कह रही हैं कि उन्हें क़ब्र से डर लगता है इसलिए उन्हें उन्हीं कपड़ों में दफ़्न कीजिएगा जो आप 'वही' के उतरते वक़्त पहने हुए थे।

हज़रत ख़दीजा पूरे 25 साल रसूल[स०] के घर का चमकता हुआ सितारा रहीं। उनकी सुकून पहुँचाने वाली निगाहें रसूल[स०] के दिल को बड़ा सुकून पहुँचाया करती थीं लेकिन अफ़सोस! हज़रत ख़दीजा दुनिया से गईं तो अल्लाह के रसूल के दिल पर दुखों के पहाड़ टूट पड़े। यह बात हिजरत से तीन साल पहले और बेसत के दसवें साल दस रमज़ानुल मुबारक की है।

अनमोल मोती

क़ुरआन ने हज़रत ख़दीजा[अ०] को जो नाम दिया है वह 'उम्मुल मोमिनीन' है। जनाबे ख़दीजा[अ०] जनाबे फ़ातिमा[स०] की औलाद में होने वाले सारे मासूम इमामों की माँ होने के साथ-साथ हज़रत अली[अ०] को पालने वाली भी हैं।

औरतों में सबसे पहले हज़रत ख़दीजा[अ०] इस्लाम लाई थीं।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "जिस दिन अल्लाह के रसूल[स०] को रिसालत मिली उस दिन मक्के में अल्लाह के रसूल[स०] और ख़दीजा[अ०] के घर के सिवा और कोई घर ऐसा नहीं था जिसमें इस्लाम के मानने वाले रहते हों और तीसरा मैं था।"

:: रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया था, "ऐ ख़दीजा! ख़ुदा रोज़ाना कई बार तुम्हारी वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र करता है।"

:: हज़रत ख़दीजा[अ०] वह हैं जिनके काम को ख़ुदा ने अपना काम कहा है और जिनकी दौलत से अपने रसूल[स०] की मदद करते हुए क़ुरआन में इस तरह तारीफ़ की हैः "ऐ रसूल! हम ने आपको तंगदस्त[1] पाया तो ग़नी कर दिया"। (सूरए ज़ुहा)

---

[1] जिसके पास कुछ भी न हो

:: अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया हैः जिब्राईल ने मेरे पास आकर कहाः ''ऐ अल्लाह के रसूल! जब भी ख़दीजा आपके पास आया करें उन्हें ख़ुदा का और मेरा सलाम पहुँचाया कीजिए और उन्हें जन्नत में ज़बरजद (मोती) से बने घर की ख़ुशख़बरी दिया कीजिए जहाँ कोई दुख-दर्द नहीं होगा।''

:: रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, ''मर्दों में तो बहुत से लोग कमाल तक पहुँचे हैं लेकिन औरतों में चार औरतें ऐसी हैं जो कमाल तक पहुँच पाई हैंः आसिया, मरयम, ख़दीजा और फ़ातिमा।

3- हज़रत अली[अ०] ने भी फ़रमाया हैः दुनिया की औरतों की सरदार चार औरतें हैंः ख़दीजा, फ़ातिमा, आसिया, मरयम।

हज़रत ख़दीजा[अ०] के बारे में अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया हैः ''ख़दीजा मेरी बीवी हैं, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।''

जब रसूले इस्लाम[स०] को मेराज पर ले जाया गया तो आपने जिब्राईल से पूछा कि क्या कुछ कहना चाहते हो? जिब्राईल ने कहा कि जी हाँ! आप जब ज़मीन पर वापस जाएं तो मेरी और ख़ुदा की तरफ़ से ख़दीजा को सलाम कहियेगा। रसूल[स०] वापस आए और ख़ुदा व जिब्राईल का सलाम हज़रत ख़दीजा[अ०] तक पहुँचाया तो उन्होंने यूँ जवाब दियाः ''बेशक ख़ुदा ख़ुद सलाम है और उसकी तरफ़ से सलाम है और सलाम उसी की तरफ़ जाता है और जिब्राईल पर भी सलाम हो।

*****